हरियाणा में पाँच वर्ष से कम आयु की बाल मृत्यु दर में पाँच अंकों की गरिावट

चर्चा में क्यों?

21 अप्रैल, 2022 को हरियाणा के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री अनलि वजि ने बताया कि भारत के रजस्ट्रिार जनरल और नमूना पंजीकरण प्रणाली (एसआरएस) के अनुसार नवीनतम बाल स्वास्थ्य आँकड़ों में पाँच वर्ष से कम आयु की शशि‍ु मृत्यु दर में हरियाणा में पाँच अंकों की उल्लेखनीय गरिावट आई है।

प्रमुख बदि‍ु

- मंत्री अनलि वजि ने बताया कि पंजाब, हमिाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड जैसे पड़ोसी राज्यों की तुलना में हरियाणा में यू5एमआर में 5 अंकों की गरिावट सबसे अधकि है।
- उन्होंने बताया कि हरियाणा माताओं और शशि‍ुओं को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के नरिंतर प्रयास के माध्यम से बाल स्वास्थ्य सेवाओं को और बेहतर बनाने पर ध्यान केंद्रति कर रहा है। आरबीएसके कार्यक्रमों के तहत मुफ्त सर्जरी ने भी बाल मृत्यु दर की गरिावट में योगदान दयि‍ा है।
- हरियाणा में पाँच अंकों की गरिावट के साथ पाँच वर्ष से कम मृत्यु दर (यू5एमआर) 36 (एसआरएस, 2018) से घटकर 31 (एसआरएस, 2019) प्रति 1000 जन्म हुई है।
- शशि‍ु मृत्यु दर (आईएमआर) 30, (एसआरएस 2018) से 27 (एसआरएस 2019) और नवजात मृत्यु दर (एनएमआर) 22 (एसआरएस 2018) से घटकर 19 (एसआरएस 2019) हो गई है, इन दोनों संकेतकों में भी उल्लेखनीय 3 अंक की गरिावट आई है।
- बाल स्वास्थ्य संकेतकों में गरिावट स्वास्थ्य वभिाग द्वारा की गई, वभिन्नि बाल स्वास्थ्य पहलों के कारण हुई है, जसिमें कार्यात्मक कंगारू मदर केयर यूनटि (केएमसी इकाइयों) के साथ 24 वशिष नवजात देखभाल इकाइयाँ (एसएनसीयू) शामलि हैं। उपमंडल अस्पताल (एसडीएच), अंबाला छावनी और एसडीएच जगाधरी में 2 नए एसएनसीयू स्थापति कयि‍े गए हैं।
- नलहड़ मेडकिल कॉलेज, नूँह और अग्रोहा मेडकिल कॉलेज, हसिार में मदर न्यूबॉर्न केयर यूनटि (एमएनसीयू) की स्थापना की गई है। 66 नवजात स्थरीकरण इकाइयों (एनबीएसयू), 318 नवजात देखभाल केंद्रों के साथ-साथ 11 पोषण पुनर्वास केंद्रों (एनआरसी) ने भी एनएमआर और आगे आईएमआर को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमकि‍ा नभिाई है।
- यू5एमआर में कमी टीकाकरण सेवाओं में सुधार, अन्य बाल स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों, जैसे- गहन दस्त नयिंत्रण पखवाड़ा, सामाजकि जागरुकता और नमिोनयि‍ा को सफलतापूर्वक बेअसर करने के लयि‍े कार्रवाई, सूक्ष्म पोषक तत्त्व अनुपूरक दौर, राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दविस, आशा के माध्यम से घर-घर प्रसवोत्तर देखभाल आदि नयिमति रूप से चलने वाले कार्यक्रमों के कारण हुई है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/decline-in-child-mortality-under-the-age-of-five